

गुरु रवदास की जयंती

चर्चा में क्यों?

हरियाणा के मुख्यमंत्री ने [गुरु रवदास](#) को उनकी जयंती पर शुभकामनाएँ और बधाई दी। गुरु रवदास जयंती माघ माह की पूर्णमा तथि को मनाई जाती है।

मुख्य बदि

- संतों के सम्मान हेतु सरकारी पहल
 - हरियाणा सरकार ने **संत-महापुरुष सम्मान और वचिार प्रचार-प्रसार योजना** शुरू की।
 - इस पहल के तहत राज्य स्तर पर संतों और **महापुरुषों की जयंती** और शताब्दी मनाई जाएगी।
- गुरु रवदास के बारे में:
 - संत गुरु रवदास, जनिका **जन्म 1377 ई. में सीर गोवर्धनपुर, उत्तर प्रदेश** में हुआ था, एक संत, **दार्शनिक, कवि और समाज सुधारक** के रूप में पूजनीय हैं।
 - **रैदास, रोहदास और रवदास जैसे वभिन्न नामों से भी जाने जाते हैं और वे पारंपरिक रूप से चमड़े के काम से जुड़े समुदाय से संबंधित थे।**
 - गुरु रवदास ने भक्त आंदोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, **उन्होंने ईश्वर के प्रति समर्पण पर ज़ोर दिया और आध्यात्मिक समानता को बढ़ावा दिया।**
 - उनकी शिक्षाओं में **मानव अधिकार, समानता और आध्यात्मिक ज्ञान** पर ज़ोर दिया गया है।
 - **उनकी कुछ रचनाएँ** प्रतिष्ठित धर्मग्रंथ, **गुरु ग्रंथ साहिब जी** में शामिल हैं, जो उनके साहित्यिक और दार्शनिक महत्त्व को बढ़ाती हैं।

भक्त आंदोलन

- भक्त आंदोलन का विकास **तमलिनाडु में 7वीं और 9वीं शताब्दी के बीच** हुआ।
- यह **नयनारों (शिव के भक्त) और अलवारों (वशिष्ठ के भक्त)** की भावनात्मक कविताओं में परलक्षित होता है।
 - इन संतों ने धर्म को एक टंडी औपचारिक पूजा के रूप में नहीं, बल्कि पूज्य और उपासक के बीच प्रेम पर आधारित एक प्रेमपूर्ण बंधन के रूप में देखा।
- समय के साथ दक्षिण के वचिार उत्तर की ओर बढ़े लेकिन यह बहुत धीमी प्रक्रिया थी।
- **भक्त वचिारधारा को फैलाने के लिये एक अधिक प्रभावी तरीका स्थानीय भाषाओं का उपयोग था।** भक्त संतों ने स्थानीय भाषाओं में अपने पद लिखे।
- उन्होंने **संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद भी किया ताकि उन्हें व्यापक दर्शकों के लिये समझने योग्य बनाया जा सके।**
 - उदाहरणों में शामिल हैं **ज्ञानदेव** ने मराठी में लिखा, **कबीर, सुरदास और तुलसीदास** ने हिंदी में, **शंकरदेव** ने असमिया को लोकप्रिय बनाया, **चैतन्य और चंडीदास** ने बंगाली में अपना संदेश फैलाया, **मीराबाई** ने हिंदी और राजस्थानी में लेखन शामिल है।